राजनीतिक तरकस

RNI NO.: DELHIN/2016/70363

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

मूल्य : ₹5

■ वर्ष : 01 ■ अंक : 04 ■ पृष्ठ : 08 ■ नई दिल्ली
■ बुधवार ■ 19 अक्टूबर , 2022 (19 अक्टूबर से 25 अक्टूबर 2022)

राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

मोदी राज में आया सनातन का स्वर्ण काल !

अभय तिवारी
(वरिष्ठ पत्रकार)

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय।।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मे
'न' काराय नमः शिवायः।।

पंचाक्षर मंत्र महिमा और उसके प्रभावशीलता का वर्णन करने के लिए आदि शंकराचार्य द्वारा रचित मंत्रोच्चार के बीच कालों के काल उज्जैन के महाकाल मंदिर कॉरिडोर की उद्घाटन एक बात स्पष्ट हो गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरे भारत में प्राचीन,धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत और धरोहर रहे मंदिरों का जीर्णोद्धार कर उन्हें अपनी पुरानी गरिमा वापस दिला रहे हैं। पीएम मोदी देश में आध्यात्मिक जागृति ला रहे हैं। वह अपने धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव को छुपाते भी नहीं है। काशी कॉरिडोर के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एक पत्रकार ने पूछा था कि क्या आप धार्मिक हैं? तो चंद सैकेंड में एक लाइन में जवाब आया कि वो स्पीरिचुअल हैं।

भारत की राजनीति में आए इस परिवर्तन की नींव तो 16 मई 2014 को पड़ गई जब पहली बार मोदी की अगुवाई में भाजपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। भारत में हुए इस परिवर्तन पर लंदन के मशहूर गार्जियन अखबार ने 18 मई के अपने संपादकीय में लिखा भारत को आज वास्तविक आजादी मिली है। भारत 1947 में भले ही आजाद हो गया था लेकिन अब तक वहां पर औपनिवेशिक मानसिकता वाले सरकारें ही रही हैं। गार्जियन की यह टिप्पणी भारत की अब तक की राजनीति की दिशा और दशा बताने के लिए काफी है।

यह भारत क संस्कृति पुनरुत्थान का काल है। अब नए भारत का निर्माण शुरू हो चुका है और इसे सरकार की नीतियों में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अब सरकार का मुखिया की स्पष्ट दृष्टि है कि किसी राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव इतना विशाल तभी होता है, जब उसकी सफलता का परचम, विश्व पटल पर लहरा रहा होता है।सफलता के शिखर तक पहुँचने के लिए ये जरूरी है कि राष्ट्र अपने सांस्कृतिक उत्कर्ष को छुए, अपनी पहचान के साथ गौरव से सर उठाकर खड़ा हो। यह वही देश है जहां

मुस्लिम आक्र ांताओं के सबसे ज्यादा हमने जलने वाले सोमनाथ मंदिर के

पुनर्निर्माण के जब देश के पहले गृहमत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने शुरुआत की तो तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हिंदुओं के जागृत होने के भय से अपने गृह मंत्री को इस तरह के धार्मिक कार्यों से दूर रहने की सलाह दी। और तो और जब यह मंदिर बन करके तैयार हो गया तब उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किए गए पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद को भी इस कार्यक्रम में ना जाने की सलाह दी।

यह अलग बात है कि डॉ प्रसाद ने धर्म को अपना

निजी मामला मानते हुए मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम में गए।

परंतु आस्था से जब महाकाल प्रसन्न होते हैं तो उनके आशीर्वाद से ही ऐसे ही भव्य स्वरुप का निर्माण होता है। और महाकाल का जब आशीर्वाद मिलता है तो काल की रेखाएं मिट जाती हैं।उज्जैन के छण-छण में, पल-पल में इतिहास सिमटा हुआ है। कण-कण में आध्यात्म समाया हुआ है और कोने-कोने में ईश्वरीय ऊर्जा संचारित हो रही है।उज्जैन ने हजारों वर्षों तक भारत की संपन्नता और समृद्धि का, ज्ञान और गरिमा का, और साहित्य का नेतृत्व किया है। उज्जैन वो नगर है, जो हमारी पवित्र सात पुरियों में से एक गिना जाता है। ये वो नगर है, जहां भगवान कृष्ण ने भी आकर शिक्षा ग्रहण की थी। उज्जैन ने महाराजा विक्रमादित्य का वो प्रताप देखा है, जिसने भारत के नए स्वर्णकाल की शुरुआत की थी। नरेंद्र मोदी के पीएम बनने के बाद स्थितियां बदलनी शुरु हो गयीं। पिछले 20 सालों में मोदी ने कई प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार का काम शुरु किया और उसे पूरा कर के दिखाया है।

प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों, हमारी सभ्यता, संस्कृति के प्रतीक रहे इन मंदिरों के पुनः निर्माण का काम पीएम मोदी को महान हिंदू रानी अहिल्या बाई होल्कर की श्रेणी में डाल रहा है जिन्होंने 18वीं सदी में मंदिरों के निर्माण और उनके जीर्णोद्धार का अभूतपूर्व कार्य किया था जो आने वाली पीढियों के लिए एक उदाहरण बना। अब हम बात करते हैं उन महत्वपूर्ण मंदिरों की जिनके जीर्णोद्दार का काम पीएम मोदी ने किया है

अयोध्या का राम मंदिर

जैसे ही 9 नवंबर, 2019 को 7 दशक पुराने राम जन्मभूमि पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया, पूरे देश का 500 साल पुराना सपना और हिंदू समाज की लड़ाई का अंत हो गया. इसी मंदिर के लिए अयोध्या के 105 गांवों के सूर्यवंशी क्षत्रियों ने पगड़ी और जूते पहनने की अपनी 500 साल पुरानी अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी. नरेन्द्र मोदी सरकार पूरी तेजी के साथ मंदिर निर्माण के काम पर आगे बढ़ी और पीएम मोदी ने खुद आ बढ़ कर अगस्त 2020 में इसकी आधारशिला रखी।

काशी विश्वनाथ कॉरीडोर

अपनी तमाम धरोहरों के बावजूद दुनिया का सबसे पुराना शहर वाराणसी अपनी तंग और गंदी गलियों के रुप में भी जाना जाता था। रेन्द्र मोदी ने पीएम बनने के बाद से ही काशी को उसके स्तर के

मुताबिक बुनियादी ढांचा देने का

ऐलान कर दिया। 8 मार्च 2019 को पीएम मोदी ने काशी विश्वनाथ कॉरीडोर और मंदिर परिसर के जीर्णोद्धार का काम शुरु कर दिया। पीएम मोदी ने आर्किटेकट से कहा कि एक ऐसा रास्ता बनाओ जिससे तीर्थ यात्रियों का मन प्रफुल्लित हो जाए। मंदिर के चारों ओर बने घरों से जिससे मंदिर परिसर से सीधा घाट दिखना बंद हो गया था। पीएम मोदी ने इसलिए बस यही मंत्र दिया कि दर्शन करने आए लोगों को घाट से पानी लेकर सीधा मंदिर में आना पड़े ऐसा रास्ता बनना चाहिए। पीएम मोदी हर वक्त इसके निर्माण कार्य की निगरानी करते रहे और जरुरी दिशा निर्देश जारी करते रहे। भूमि के अधिग्रहण में भी कोई मुकदमा नहीं हुआ जो एक बड़ी उपलब्धि थी। मंदिर के चारो तरफ इमारतों के गिराए जाने के बाद कम से कम 40 प्रचीन मंदिरों का भी पता चला जिनका जीर्णोद्दार किया गया। नजीता है है पूरी तरह से नया बना हुआ भव्य काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर सिर्फ 4 साल में बनकर तैयार हो गया।

सोमनाथ मंदिर परिसर

बतौर मुख्यमंत्री गुजरात, नरेन्द्र मोदी ने कई योजनाए शुरु की जिसके तहत मंदिरों के सौंदर्यिकरण से लेकर उनके पुनर्निर्माण का काम शुरु हुआ। चंद महीनों पहले ही पीएम मोदी ने सोमनाथ मंदिर परिसर में ठीक समुद्र के किनारे एक प्रदर्शनी केन्द्र का उद्घाटन किया।

(शेष पृष्ठ >>3 पर)

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
समय से संवाद
वर्ष : 01 , अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

'शिवलिंग' की कार्बन डेटिंग की मांग कोर्ट में खारिज

वाराणसी। वाराणसी कोर्ट का बड़ा फैसला आ गया है। कोर्ट ने ज्ञानवापी मस्जिद के वजूखाने में मिले कथित शिवलिंग की कार्बन डेटिंग नहीं कराने का फैसला सुनाया है। कोर्ट की ओर से अपने फैसले में साफ कर दिया गया है कि मस्जिद में मिले शिवलिंग की कार्बन डेटिंग कराकर इसकी उम्र के संबंध में वैज्ञानिक साक्ष्य हासिल नहीं किए जाएंगे। हिंदू पक्ष इस शिवलिंग को प्राचीन विश्वेश्वर महादेव करार दे रहा है। वहीं, मुस्लिम पक्ष इसे लगातार फव्वारा बताते हुए कार्बन डेटिंग का विरोध कर रहा है। कोर्ट के फैसले ने ज्ञानवापी मुद्दे को एक बार फिर गरमा दिया है। कार्बन डेटिंग की मांग वाराणसी कोर्ट ने खारिज कर दी है।

ज्ञानवापी मामले की सुनवाई वाराणसी की जिला अदालत में चल रही है। ज्ञानवापी मामले में कोर्ट ने पिछले दिनों बड़ा फैसला देते हुए दैनिक पूजा से संबंधित याचिका को सुनवाई के लिए मंजूरी दे दी थी। इसके बाद कार्बन डेटिंग पर पक्ष में फैसला आने की उम्मीद हिंदू पक्ष कर रहा था। इससे पहले माता श्रृंगार गौरी के दैनिक पूजन की मांग को लेकर पांच महिलाओं की याचिका पर कोर्ट ने उनके पक्ष में फैसला सुनाया था। केस की पोषणीयता को लेकर चली सुनवाई में हिंदू पक्ष को जीत मिली। वहीं, मुस्लिम पक्ष निचली अदालत के फैसले के खिलाफ इलाहाबाद हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक गई। लेकिन, उन्हें वहां झटका लगा। अब कार्बन डेटिंग के पक्ष में फैसला आने को मुस्लिम पक्ष अपनी बड़ी जीत मानकर चल रहा है।

कोर्ट में दोनों पक्षों के लोग हैं मौजूद

वाराणसी कोर्ट में दोनों पक्षों के लोग मौजूद हैं। कोर्ट रूप में हिंदू और मुस्लिम पक्ष के लोग मौजूद हैं। हिंदू पक्षकारों ने कोर्ट में जाने के दौरान हर-हर महादेव के नारे लगाए। साथ ही, पक्ष में फैसला आने की उम्मीद जताई। कोर्ट में दोनों पक्षों के 62 लोग मौजूद थे। जिला जज अजय कुमार विश्वेश की अदालत ने 11 अक्टूबर को सुरक्षित रखे गए फैसले को शुक्रवार को सुनाया।

11 अक्टूबर को सुरक्षित रखा या था फैसला

ज्ञानवापी मस्जिद मामले में निचली अदालत ने 11 अक्टूबर को सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। कोर्ट को यह तय करना था कि कि कार्बन डेटिंग या वैज्ञानिक तरीके से ज्ञानवापी परिसर की जांच करानी है या नहीं? हिंदू पक्ष की ओर से शिवलिंग की कार्बन डेटिंग की मांग की गई है। इसके लिए शिवलिंग की उम्र का वैज्ञानिक परीक्षण के जरिए पता लगाकर असलियत को सामने लाने की बात कही गई है। वाराणसी के जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश की कोर्ट में मामले की सुनवाई चल रही है।

निचली अदालत ने इससे पहले मई में ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वे का आदेश जारी किया था। भारी विवाद के बीच सर्वे कराया गया। मस्जिद के वजुखाने में एक कथित शिवलिंग मिला। इसके बाद हिंदू प्रतीक चिन्ह भी मिले। सर्वे में मिले शिवलिंग को को लेकर पूरा विवाद गरमाया हुआ है। हिंदू पक्ष की मांग है कि शिवलिंग को किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाए बिना कार्बन डेटिंग हो।

क्या है कार्बन डेटिंग?

कार्बन डेटिंग ऐसी विधि है, जिसकी सहायता से उस वस्तु की उम्र का अंदाजा लगाया जाता है। मान लीजिए कोई पुरातात्विक खोज की जाती है या फिर वर्षों पुरानी कोई मूर्ति मिल जाती है, तो कैसे पता चलेगा कि वह कितनी पुरानी है। कार्बन डेटिंग से उम्र की गणना की जाती है इसे अब्सल्यूट डेटिंग भी कहा जाता है। इसको लेकर भी कई सवाल है कई बार यह इससे भी सही उम्र का अंदाजा नहीं लग पाता है। हालांकि इसकी सहायता से 40 से 50 हजार साल की सीमा का पता लगाया जा सकता है।

हिंदी में होगी डॉक्टरी की पढ़ाई, अमित शाह बोले- शिवराज सिंह ने पीएम के सपने को पूरा किया

देश में हिंदी में चिकित्सा शिक्षा का नया अध्याय आज से शुरू हो रहा है। मध्य प्रदेश पहला राज्य होगा, जहां चिकित्सा शिक्षा हिंदी में होगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में एमबीबीएस हिंदी पाठ्यक्रम पुस्तक का विमोचन किया। अमित शाह ने कहा कि आज का दिन भारत के शिक्षा क्षेत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है। जब भी आने वाले दिनों में इतिहास लिखा जाएगा आज के दिन को स्वर्ण के अक्षरों से लिखा जाएगा। ये देश में शिक्षा क्षेत्र के पुनर्जागरण का क्षण है। अमित शाह ने कहा कि नई शिक्षा नीति में पीएम मोदी ने प्राथमिक शिक्षा, टेक्निकल और मेडिकल की शिक्षा में बच्चे की मातृभाषा को अहमियत देकर ऐतिहासिक निर्णय लिया है। वहीं शिवराज सिंह सरकार ने देश में सबसे पहले मेडिकल की शिक्षा हिंदी में शुरू करके प्रधानमंत्री की इच्छा की पूरा किया है। इस दौरान अमित शाह के साथ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी दिखें । मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस मौके पर कहा झ आज का दिन ऐतिहासिक दिन है। मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में मध्य प्रदेश की धरती पर होगी। हिंदी की पढ़ाई गरीब बच्चों की जिंदगी में एक नया प्रकाश लेकर आएगी। एमबीबीएस प्रथम वर्ष के तीन विषयों की हिंदी पुस्तकों का विमोचन लाल परेड मैदान में आयोजित ह्यहिंदी में ज्ञान का प्रकाशह्न कार्यक्रम में हुआ। वहीं राज्य सरकार भी इस नए प्रयोग को लेकर रोमांचित है। सरकार के इस नय प्रयोग का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सीएम शिवराज और उनके सभी मंत्री, विधायक सहित बीजेपी के नेताओं ने सोशल मीडिया अकाउंट पर डीपी व कवर फोटो बदला है। पहली बार ऐसी अनूठी पहल को लेकर प्रदेश के युवाओं में काफी उत्साह का माहौल है।

इस बार हिमाचल का चुनावी संग्राम खास होगा

हिमाचल प्रदेश 68 विधानसभा सीटों के भाग्य का फैसला लिखे जाने की तारीखों की घोषणा मुख्य चुनाव आयोग ने कर दी है, 12 नवम्बर 2022 को वोटिंग एवं 8 दिसम्बर को परिणाम घोषित किये जायेंगे। इस बार अकेले हिमाचल में हो रहे चुनाव काफी दिलचस्प एवं अहम होने के साथ काँटे की टक्कर वाले होंगे। हिमाचल में अब तक मुख्य चुनावी दंगल भाजपा और कांग्रेस के बीच ही होता आया है लेकिन इस बार आम आदमी पार्टी भी अपना भाग्य आजमाने के लिये मैदान में है। आम आदमी पार्टी के लिये पूर्वानुमान लगाना इसलिये पैचीदा है कि उसकी मुफ्त रेवड़ी वाली संस्कृति कभी तो अपूर्व असरकारकारक हो जाती है और कभी एकदम गुब्बारे से निकली हवा की तरह फिस्स। फिर भी आप हिमाचल के लोगों को भी लुभाने की कोशिश कर रही है, उसके हौसलें भी बुलन्द है, इसलिए देखना होगा हिमाचल की जनता इस पार्टी को कितना आशीर्वाद देती है। जो भी हो, आप की चुनावी उपस्थिति भाजपा एवं कांग्रेस दोनों ही दलों के लिये एक चुनौती बन रही है। निश्चित ही इस बार हिमाचल के चुनाव खास है।

हिमाचल का चुनाव भाजपा के लिये इसलिये खास है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा एवं केन्द्र सरकार में सर्वाधिक सक्रिय एवं युवामंत्री अनुराग ठाकुर इसी प्रांत से आते हैं। दोनों कद्दावर नेताओं का गृहराज्य होने से भाजपा के लिए यह प्रतिष्ठा का चुनाव है। फिलहाल यहां भाजपा की सरकार है। इसलिए भाजपा यहां बेहतर प्रदर्शन के लिए जी-जान से जुटी है। हिमाचल में फिर से सरकार बनाने के लिए भाजपा ने कमर कस ली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खुद पिछले 17 दिनों में तीन बार राज्य का दौरा कर चुके हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मोदी एक करिश्माई नेता है, उनकी यात्राओं से हिमाचल का चुनावी गणित बनता और बिगड़ता रह सकता है। एक दिन पहले ही उन्होंने राज्य को वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन देने के साथ ही विभिन्न विकास परियोजनाओं की सौगात दी और दो जिलों में जनसभाओं को भी संबोधित किया। प्रधानमंत्री हाल ही में कुल्लू दशहरा उत्सव में भी शामिल हुए थे। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा भी लगातार हिमाचल प्रदेश का दौरा कर रहे हैं। लेकिन मोदी ही भाजपा को जीत दिलाने वाले सर्वाधिक सक्षम भाजपा नेता है, भले ही यह नड्डा एवं ठाकुर का गृहराज्य हो। हिमाचल में चुनाव का बिगुल बजने के साथ ही चुनावी सरगर्मिया उग्र होती जा रही है। सत्तारूढ़ भाजपा के साथ ही कांग्रेस और आम आदमी पार्टी अपनी रणनीति को अंतिम रूप देने में जुट गई हैं। भाजपा के सामने जहां सत्ता बरकरार रखने की चुनौती है, वहीं कांग्रेस सत्ता परिवर्तन के लिए जोर लगा रही है।

कांग्रेस इसलिये उत्साहित नजर आ रही है कि हिमाचल प्रदेश के इन वर्षों के राजनीतिक इतिहास पर नजर डालें तो यहां जनता एक बार भाजपा और एक बार कांग्रेस को सरकार बनाने का मौका देती रही है। इस परम्परा पर विश्वास किया जाये तो इस बार कांग्रेस की बारी है।

लेकिन ऐसी परम्पराएं एवं राजनीतिक इतिहास बदलते हुए भी देखे गये हैं, इसीलिये नया इतिहास लिखने वाली भाजपा ने सत्ता में लौटने के लिए पूरी जान लगा रखी है। भाजपा का दावा है कि वह उत्तराखण्ड की तरह ही हिमाचल में भी नया चुनावी इतिहास लिखेगी। उल्लेखीनय है कि इस साल हुए उत्तराखण्ड विधानसभा चुनावों में भी भाजपा स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में लौटी थी। जबकि उत्तराखण्ड की जनता भी इससे पहले एक बार भाजपा और एक बार कांग्रेस को सरकार बनाने का मौका देती रही है। कांग्रेस के सामने एक बड़ी चुनौती यह है कि वरिष्ठ नेता वीरभद्र सिंह के निधन के बाद उसके पास कोई बड़ा चेहरा नहीं है। आजाद भारत में हिमाचल का यह पहला चुनाव होगा जब कांग्रेस के दिग्गज नेता वीरभद्र सिंह की अनुपस्थिति में यह चुनाव होगा। हिमाचल में इससे पहले सभी चुनावों में वीरभद्र सिंह ने ही कांग्रेस का नेतृत्व करते हुए कांग्रेस को सत्ता पर काबिज किया। उनके निधन के बाद कांग्रेस की प्रदेश इकाई में भारी बिखराव देखने को मिला और वह विभिन्न धड़ों में बंटी हुई है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक जितेंद्र तिवारी द्वारा इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18/19/20, सी ब्लॉक, सेक्टर 59, नोएडा, उ.प्र.-201301 से मुद्रित तथा ई632/7 सी संगम विहार साउथ दिल्ली -110080 से प्रकाशित। प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा। प्रधान संपादक : **जितेंद्र तिवारी** प्रबंध संपादक :**राजेश तिवारी**
RNI NO.: DELHIN/2016/70363 Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069 Website: www.rajneetiktarkas.in

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज़ साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

(पृष्ठ ›› 1 का शेष)

पीएम मोदी की अध्यक्षता में सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट इस मंदिर के रख रखाव से लेकर इसकी भव्यता निखारने के सरदार पटेल और के एम मुँशी के सपने को अमली जामा पहना रहा है।

केदारनाथ धाम

मोदी सरकार ने केदारनाथ धाम के पुनर्विकास का बीड़ा उठाया। 2013 की भीषण आपदा से बर्बाद हुए केदारनाथ धाम की भव्यता को फिर से निखारा गया। फिर से बने केदारनाथ मंदिर परिसर का उद्घाटन करते हुए पीएम मोदी ने कहा था कि केदारनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण उनके लिए एक व्यक्तिगत लक्ष्य तो था ही लेकिन उन्हें 2013 और 2017 में उत्तराखंड की जनता को किया गया अपना वादा भी याद

चार धाम परियोजना

मोदी सरकार ने देवनगरी उत्तराखंड में एक और शुरुआत की। वो है चार धाम परियोजना जिसके तहत एक आधुनिक, हर मौसम की मार झेल सकने वाली सड़कें जो चारों धामों यमुनोत्री, गंगोत्री , केदारनाथ, बद्रीनाथ धाम को जोड़ेंगी. पीएम मोदी का ये सपना है कि देश भर से श्रद्धालु और पर्यटक इन चार पवित्र धामों में जाएं और इसके लिए इस सड़क परियजना को पूरा करने का काम तेजी से चल रहा है। इस चार धाम की सड़क के अलावे मोदी सरकार बहुत तेजी से पावन नगरी ऋषिकेश को रेल मार्ग से कर्णप्रयाग से जोड़ने का काम चल रहा है। पीएम मोदी को भरोसा है कि ये रेलवे याइन 2025 से

शुरु हो जाएगी।

कश्मीर में मंदिरों का पुनरोद्धार

कश्मीर में धारा 370 हटने के बाद मोदी सरकार ने श्रीनगर में कई पुराने मंदिरों का पुनर्निर्माण शुरु किया है। मोदी सरकार के आंकलन के मुताबिक कश्मीर में कुल 1842 हिंदू मंदिर या फिर पूजास्थल हैं। इसमें से 952 मंदिर हैं जिनमें 212 में पूजा चल रही है जबकि 740 जीर्ण शीर्ण हालत में है। मोदी सरकार ने सबसे पहले झेलम नदी के किनारे बने रघुनाथ मंदिर का फिर से निर्माण किया। भगवान राम का ये मंदिर महाराजा गुलाब सिंह ने 1835 में बनवाया था। हालांकि ये प्रोजेक्ट अभी शुरुआती अवस्था में है लेकिन वहां के हालात देख कर एक बड़ा कदम माना जा सकता है।

विदेशी जमीन पर भारत की सांस्कृतिक परंपरा की छाप छोड़ना

पीएम मोदी न सिर्फ भारत में बल्कि दुनिया के दूसरे देशों मं भी मंदिरों को भव्य बनाने पर जोर देना शुरु कर दिया है। साल 2019 में पीएम मोदी की सरकार ने मनामा और अबू धाबी में भगवान श्रीकृष्ण श्रीनाथजी के पुनर्निर्माण के लिए 4.2 मिलियन डॉलर देने का ऐलान किया। इसके साथ ही 2018 में पीएम मोदी ने अबू धाबी में बनने वाले पहले हिंदू मंदिर की आधारशिला रखी थी।

अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन को पाकिस्तान की सच्चाई इतनी देर से क्यों समझ आई?

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन को आखिरकार समझ आ गया है कि पाकिस्तान दुनिया का सबसे खतरनाक देश है। दुनिया हैरान है कि अभी कुछ समय पहले पाकिस्तान को करोड़ों डॉलर की मदद देने वाले बाइडन को यह समझ आने में इतना वक्त क्यों लग गया कि दुनिया के खतरनाक देशों में पाकिस्तान शुमार है और उसके पास बिना किसी सुरक्षा के परमाणु हथियार हैं जोकि सबके लिए खतरे की बात है। हम आपको बता दें कि बाइडन ने डेमोक्रेटिक पार्टी की कांग्रेस अभियान समिति के समारोह में पाकिस्तान के बारे में यह बात कही है। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या बाइडन को एक-दो दिन पहले ही पाकिस्तान के खतरनाक देश होने के बारे में पता चला था? यदि इस सवाल का जवाब हाँ है तो यह अमेरिका के खुफिया तंत्र की नाकामी है कि वह अपने राष्ट्रपति को पाकिस्तान के बारे में सही से स्थिति बता नहीं पाये। यदि इस सवाल का जवाब ना है तो बाइडन को बताना चाहिए कि उन्होंने फिर क्यों पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले को पलट कर पाकिस्तान को मदद मुहैया कराने को मंजूरी दी थी?

जहां तक बाइडन को पाकिस्तान के बारे में हुए ज्ञान की बात है तो आपको बता दें कि उन्होंने विश्व की बदलती भू राजनैतिक स्थिति के संदर्भ में कहा है कि मुझे लगता है कि पाकिस्तान दुनिया के सबसे खतरनाक देशों में से एक है। वैसे बाइडन को भले यह ज्ञान अब हुआ हो लेकिन पश्चिमी देशों ने पाकिस्तान के परमाणु हथियारों की सुरक्षा और संरक्षा को लेकर हमेशा चिंता जताई है। दुनिया भर की हमेशा यह चिंता रही है कि पाकिस्तान के परमाणु हथियार आतंकवादियों या जिहादियों के हाथ में जा सकते हैं।

हम आपको यहां बताना चाहेंगे कि ब्रूकिंग्स में विदेश नीति कार्यक्रम के वरिष्ठ विशेषज्ञ मर्विन काल्ब ने पिछले साल लिखा था कि मई 1998 में पाकिस्तान ने पहला परमाणु परीक्षण किया और यह दावा किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये इसकी

जरूरत थी। उसके बाद से अमेरिका के सभी राष्ट्रपतियों को यह भय रहा कि पाकिस्तान के परमाणु हथियार गलत हाथों में पड़ सकते हैं। इसमें अब यह डर भी शामिल है कि अफगानिस्तान में तालिबान की जीत के बाद पाकिस्तान में जिहादी सत्ता हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। यही नहीं, अमेरिका के शीर्ष जनरल मार्क मिले ने भी चेताया था कि अफगानिस्तान से अपनी सेना हटाने की वजह से पाकिस्तान के परमाणु हथियारों की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

बहरहाल, बाइडन पाकिस्तान को खतरनाक मान चुके हैं तो उन्हें अब इस बात पर भी विश्वास कर लेना चाहिए कि पूरी दुनिया में आतंकवाद का सबसे बड़ा स्रोत है पाकिस्तान और पाकिस्तान प्रायोजित इस आतंकवाद का सबसे बड़ा पीड़ित है हिंदुस्तान।

इसलिए बाइडन ने पाकिस्तान को एफ-16 लड़ाकू विमान के बेड़े के रखरखाव के लिए 45 करोड़ डॉलर की वित्तीय सहायता को जो मंजूरी दी थी उस फैसले को अब उन्हें पलट देना चाहिए। बाइडन को समझना चाहिए कि पाकिस्तान के लिए मंजूर की गयी 45 करोड़ डॉलर की राशि यदि पूरी की पूरी उसके पास पहुँच गयी तो बाढ़ से जूझ रही पाकिस्तानी आम जनता को मदद पहुँचाने की बजाय यह पाकिस्तान के नेताओं की अय्याशी और पाक सरकार तथा सेना की भारत विरोधी गतिविधियों पर ही खर्च होगी।

हम आपको यह भी बता दें कि पाकिस्तान के बारे में अमेरिका की नीतियों पर भारत लगातार सवाल उठाता रहा है। पाकिस्तान को अमेरिका की हालिया आर्थिक मदद पर भारत ने अमेरिकी सरकार के समक्ष जोरदार तरीके से आपत्ति दर्ज कराई थी। इसके अलावा अभी हाल ही में आस्ट्रेलिया दौरे के दौरान विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि पश्चिमी देशों पर निशाना साधते हुए कहा था कि उन्होंने भारत को हथियारों की आपूर्ति नहीं की, बल्कि हमारे सामने एक सैन्य तानाशाह को अपना पसंदीदा साथी बनाया था।

विशेष

राजनीतिक तरकस 5
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष वर्ष : 01, अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

स्वराज के रक्षक कवि भूषण नवल सिंह जोगणी

प्रोफेसर डॉ राव गोविंद सिंह भारद्वाज

अनुमानित सन् 1769, मराठों ने मेवाड़ पर आक्रमण किया तब जोगनी के ठाकुर खुमाण सिंह अपने पाँच पुत्रों एवं सलूंबर रावत पहाड़ सिंह के साथ शत्रुओं से लोहा लेने पहुँचे। नीमच के पास हड़कियाखाल में 3 दिनों तक युद्ध चला, जोगणी के छहों सपूत वीर गति को प्राप्त हुए। ठकुराइन एवं पाँचों पुत्रवधुओं ने सती:धर्म का पालन किया। इस युद्ध में सलूंबर रावत भी वीरगति को प्राप्त हुए और अनेक वीर योद्धा बलिदान हुए।

तब किसी कवि ने लिखा

सुवन पांच हुंता सुकव जोगण गढ़ो सुजान।
पाहड साथे पूगिया खांगा रोक खुमाण।।

युद्ध भूमि में वीरगति का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करनेवाले इसी वंष में कवि भूषण नवल सिंह ने जन्म लिया। नवलसिंह के पिता श्री इंदर सिंह जी अपने पुरखों की परम्परा को निभानेवाले थे। मेवाड़ का स्वातंत्र्य प्रेम उनकी रग-रग में भरा था, वे अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ रहकर देश को स्वतंत्र कराने में तत्कालीन राजाओं के साथ मिलकर अपना कार्य करते रहे। इसी दौरान उन्होंने होल्कर घराने के साथ रहकर इन्दौर में ही देह त्याग किया। उनकी छतरी आज भी इन्दौर में मौजूद है।

कवि भूषण नवल सिंह का व्यक्तित्व:

नवल जी का जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज है, प्रज्ञा और अंतर्दृष्टि का अभिलेख है। शांति और विधायक दृष्टि का परिपूर्ण संदेश है। नवल जी जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी और सात्विक भावों को धारण करनेवाले थे। प्रस्तुत आलेख में नवल सिंहजी के जन्म, उनकी शिक्षा, यात्राएँ, उनका रचा साहित्य, संपादन-कार्य, जीवन धर्म, प्रेक्षा, ध्यान सहित विलक्षण कार्य और षिक्षाओं दोनों को सम्मिलित किया गया है। साथ ही नवल सिंहजी के धर्म, अध्यात्म योग, शिक्षा, मनोविज्ञान दर्शन, न्याय, आयुर्विज्ञान, आयुर्वेद आदि पर मौलिक चिंतन पर दृष्टिपात किया गया है। कवि भूषण नवल सिंहजी ने ना केवल धर्म और विज्ञान के समन्वय पर बल दिया बल्कि दर्शन और विज्ञान को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़कर देखा। प्रस्तुत आलेख एक प्रसंग है। इसमें ईमानदारी रखते हुए उनके बारे में बताने का यत्न किया गया है। आपका जन्म मेवाड़ के एक गाँव में हुआ, जहाँ ना आवागमन के आधुनिक साधन थे ना विद्यालय थे, ऐसे परिवेश में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रखर मशाल के समय आप का जन्म हुआ। आपका जीवन मानवीय चेतना की असीम क्षमता के पासपोर्ट का एक जीवंत दस्तावेज है। पारिवारिक पृष्ठभूमि व उनके अवदान से प्रतीत होता है कि आपका जीवन सत्य की एक तलाश है। स्वराज के रक्षक के रूप में अपने परिवार से, गाँव से, अपने राज्य से व प्रदेश से ऊपर उठकर के संपूर्ण मानवता की आजादी के लिए कार्य किया। आप की यात्राओं से यह संदेश मिलता है कि आप अपने परिवार और गाँव में नहीं रुके और

आपने पूरा जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए लगाया। यह बड़ा कठिन कार्य है, यह संकल्प और श्रद्धा दोनों का एक उदाहरण है। आपने अपने पिता इंद्रसिंह से यह सब कुछ पाया। आपके जीवन के बारे में विभिन्न स्त्रोतों से जानकारी एकत्रित की गई है। कुछ लोगों से पूछ कर के, कुछ से बातचीत करके और बहुत सारे ऐसे लोक-प्रचलित बातों से जानकारियाँ हासिल की गई हैं।

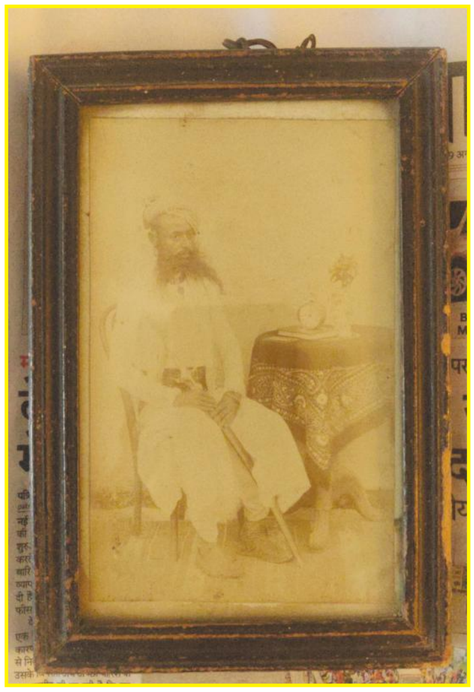

कवि भूषण नवल सिंह जी का प्रारंभिक जीवन:

कवि भूषण नवल सिंह का जन्म (अनुमानित सन् 1857-58) में मेवाड़ राज्य के एक गाँव में हुआ। यह समय भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति का समय था।

क्रांति मेरठ से शुरू हुई जो कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली और अवध आदि स्थानों से होते हुए पूरे देश में फैल गई और शीघ्र ही इसने जन क्रान्ति का रूप ले लिया। ये जन क्रांति पूरी तरह से ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध थी इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा गया। नवल सिंह ने बचपन में ही देष की पराधीनता का हाल देखा और क्रांति की कहानियाँ सुनीं। शुरू से ही इनको पारिवारिक पृष्ठभूमि से स्वाधीनता और राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा मिली। बचपन से ही आप झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना से प्रभावित रहे। आपने बाल्यकाल से ही स्वतन्त्र भारत राष्ट्र का स्वप्न देखना शुरू किया। अपनी शिक्षा दीक्षा काशी से पूरी की। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कवि राव बख्तावर के सानिध्य में हुई तथा लेखन कार्य उनके ही सानिध्य में आरंभ हुआ। अध्ययन हेतु बनारस, बिहार, आगरा में प्रवास किया। हिंदी राजस्थानी, डिंगल, पिंगल, उर्दू तथा व्याकरण का आपको अच्छा ज्ञान था।

आप जीवन पर्यंत पूरे राष्ट्र में भ्रमण करते ही रहे और सबको जागृत करते रहे। आपकी शिक्षा-दीक्षा का यह प्रभाव था कि आप देषवासियों की शिक्षा में योगदान, अध्यात्म चिंतन, सामाजिक सरोकार और आध्यात्मिक जीवन के लिए निरंतर प्रयत्नषील रहे। देषाटन की स्थिति यह रहती थी कि आपको अपने गाँव में आकर के रहने का बिल्कुल भी समय नहीं मिलता था, आप दो-तीन वर्ष में आते और चार-पाँच दिन रुकते और पुनः वापस इसी कार्य के लिए चले जाते थे। जहाँ-जहाँ उन्होंने यात्रा और प्रवास किया। उन स्थानों का साहित्य देखने का प्रयास किया, इंटरनेट पर सर्च करने का और बहुत सारे लोगों से वार्ता करने का अवसर मिला, सभी से एक ही प्रकार की जानकारी हमें मिली कि वह एक विशिष्ट व्यक्ति रहे, उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। अब आगे यह शोध का विषय है, कोई भी इतिहास के शोधार्थी हैं वह इसमें रुचि लेकर के ऐसे राष्ट्रभक्त के जीवन और साहित्य का संकलन करें।

नवलजी के पिता श्री इंदर सिंह जी का देहावसान इंदौर में हुआ जो होलकर राजवंश की राजधानी रही होलकर राजाओं के साथ में मिलकर के उन्होंने अंग्रेजों से बहुत लोहा लिया। इंदर सिंह जी के अंतिम संस्कार के स्थान पर स्मारक बना हुआ है। इंदर सिंह जी ने अनुमानतः सन् 1915-16 जो प्रथम विश्व युद्ध का समय था के दौरान अंतिम सांस ली। प्रथम विष्वयुद्ध के बाद भारत की आजादी का आंदोलन बहुत व्यापक क्षेत्र में फैल गया था। द्वितीय विष्वयुद्ध के समय तो ऐसा लग रहा था कि अब स्वतंत्र भारत का सपना साकार होने जा रहा है। आंदोलन पूरे जोर से चल रहा था। उसी समय कवि भूषण नवल सिंह ने 85 वर्ष से भी अधिक आयु में आपने अपने शरीर को त्याग किया यह अनुमानित सन् 1945-46 का समय रहा होगा। कुछ लोग बताते हैं कि उनका देहावसान बनारस में हुआ, गंगा के तट पर उनका दाह संस्कार किया गया जहाँ उनका स्मारक है, कुछ लोग कहते हैं कि उनका स्मारक उनके पैतृक गाँव में ही है जहाँ उनका दाह संस्कार किया गया, कुछ लोग बताते हैं कि उनका दाह संस्कार कानोड़ में हुआ।

अपने ग्राम गढ़ जोगणी मेवाड़ में कवि भूषण नवल सिंह के पुष्तैनी घर के पास छोटा सा गढ़ बना हुआ है उस गढ़ में हाथी बँधते थे, घोड़े और मवेशी रहते थे। गढ़ जोगणी का हाथी दरवाजा, ठाकुर जी का मन्दिर, जनानी ड्योढ़ी, तुलसी क्यारा आदि आज भी खण्डहर के रूप में साक्षी हैं। कवि भूषण नवल सिंह देश के विभिन्न क्षेत्रों मे भ्रमण करते थे। उनकी अनुपस्थिति में भी ग्राम गढ़ में सभी प्रकार की देख-रेख भोजन इत्यादि की व्यवस्थाएँ सभी अतिथियों का सम्मान होता था। जनजागरण के कार्य में जुटा हुआ कोई भी अतिथि वहाँ समुचित अवधि तक रहता था और राष्ट्र निर्माण की बातें पूरे समाज के साथ साझा करता था। कवि भूषण नवल सिंह अपने जीवनकाल में एक संत व्यक्ति के रूप में प्रख्यात रहे। आप तलवार और कलम दोनों के धनी थे। आपने अपने मूल ग्राम गढ़ जोगनी में मेवाड़ में बालाजी का मंदिर, अन्नपूर्णा माता का मंदिर, सांवरिया जी का मंदिर, नाहर सिंह माता का मंदिर, भैरव नाथ का मंदिर, देव नारायण मंदिर और अनेक देवस्थान स्थापित किए और उनका विकास किया। उनका मंतव्य था कि हर व्यक्ति एक ईश्वरी सत्ता में विश्वास करे और इस राष्ट्र के अंदर अध्यात्म व दैविक सामर्थ्य से अलख जगाए। वे लोगों को जागृत करते थे किवे आगे आएँ और आजादी की अलख जगाने में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सहयोग करें। देश में अनेक महापुरुषों ने आजादी की लड़ाई के दीवानों के रूप में काम किया, अंग्रेजी हुकुमत को बेदखल करने के जनजागरण कार्य की वजह से जेल में भी बंद रहना पडा व कई बार भूमिगत भी रहे। इतिहास में उन्हें हम नहीं जानते लेकिन कवि भूषण नवल सिंह जैसे संत के बारे में कुछ जानकारी पहली बार में मिशन वंदे मातरम द्वारा प्रकाशित पत्रिका को समर्पित कर रहा हूँ। मिशन वंदे मातरम की स्वराज के रक्षक जो पत्रिका है वह पत्रिका निश्चित रूप से देश के ऐसे अनकहे आजादी के दीवानों के बारे में देश को बताने में सक्षम माध्यम के रूप में अपना काम करने में सफल होंगी यह मेरी शुभकामना है।

कवि भूषण नवल सिंह का अवदान:

कवि भूषण नवल सिंह के पिता राव इन्द्र सिंह व माता के व्यक्तित्व से सीख लेकर समाज व मानवतावादी विचारों से सभी धर्मों व सम्प्रदाय के बीच जाकर जन जागरण का संकल्प लेकर पूरे भारत में अनेक यात्राएँ कीं। भारत धर्म महामंडल की स्थापना सन् 1887 में हरिद्वार में हुई। इसके संस्थापक पंडित दीनदयाल शर्मा थे, इसका प्रमुख उद्देश्य था कि सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार हो। बीसवीं शताब्दी में पंडित मदन मोहन मालवीय इससे काफी करीब से जुड़कर के रहे। सनातन धर्म के आंदोलन में भी सहभागी बने रहे। मुस्लिम लीग की स्थापना सन 1906 में हुई थी उसके विरोध में इस मंच से राजनीतिक रूप से जन जागरण हिंदू कॉन्फ्रेंस रूम सन 1909 में हुई, उसमें अखिल भारत हिंदू धर्म महा मंडल को हिंदू महासभा के रूप में सम्बोधित किया गया। इस मंच से इंडियन नेशनल कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों अवधारणा का पुरजोर विरोध किया गया। दरभंगा नरेश रामेश्वर सिंह जिनको देश के महाराजाधिराज की उपाधि से सम्मानित किया गया था वे एक स्वतंत्र हिंदू एरिस्टोक्रेट के रूप में ख्यातनाम हैं। वे पंडित मदनमोहन मालवीय के साथ रहे तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के बारे में सन् 1906 में कार्य शुरू किया। उन्होंने शुरुआत में 5 लाख रुपये का दान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए दिया और उसके बाद में अन्य स्त्रोतों से धन एकत्रित करके 68 लाख इस विश्वविद्यालय को दिए। इन सभी महत्वपूर्ण कार्यो में महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह एक बौद्ध सिद्ध तांत्रिक के रूप में ख्यातनाम रहे। धन संग्रह में और बीएचयू की स्थापना में कवि भूषण नवल सिंह जी का भी योगदान रहा, उन्होंने पंडित मदन मोहन मालवीय और महाराजाधिराज दरभंगा के साथ में मिलकर धन संग्रह का कार्य किया जो कालांतर में रू 68 लाख के रूप में जमा हुआ। मैसूर के महाराजा कृष्णा राजा वाडियार की उपस्थिति में सबसे पहला कन्वोकेशन बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी का सन् 1919 में हुआ। कविभूषण नवल सिंह उनके भी सम्पर्क में रहकर अपना योगदान देते रहे। सन् 1913 में प्रकाशित लंदन टाइम्स जो ब्रिटेन में छपता था उस में यह उल्लिखित है। उसके बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह दरभंगा से भी कवि भूषण नवलसिंह जी का निरंतर संवाद और संपर्क रहा और ऐसे अद्वितीय कार्यों में वह हमेशा सहयोगी रहे। दरभंगा नरेश काउंसिल ऑफ इंडिया जो राजा रजवाड़ों की काउंसिल थी, उसके सदस्य थे और उनको राज-ऋषि की उपाधि से सम्मानित किया था। उनका संपर्क गोपाल कृष्ण गोखले से भी रहा और मुंबई प्रोविंस व बंगाल प्रोविंस के समय भी उन्होंने अपना अनवरत योगदान दिया।

स्वराज के रक्षक, कवि भूषण नवल सिंह मेवाड़ में जन्म लेकर अखिल भारतवर्ष के सभी धर्म, संप्रदाय के लोगों को राष्ट्र के लिए एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया और इस पुनीत कार्य के लिए पूरे देश में जनजागरण किया। उन्होंने अनाथ बच्चों की शिक्षा और दैनिक जरुरतों के लिए व्यवस्था करवाई। आपने अखिल भारतवर्ष क्षत्रिय महासभा में प्रवक्ता के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। आपने सभी क्षत्रिय भाइयों, ब्राहमण संप्रदाय, वैश्य समाज तथा सभी धर्मों के लोगों को देश के विभिन्न राज्यों में जाकर मंदिर परिसरों में एकत्रित करके आजादी की अलख जगाने का भरपूर प्रयास किया। आपने मेवाड़ स्टेट के विभिन्न जागीरदारों से संपर्क किया और उन्हें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। दरभंगा रियासत में अखिल भारतवर्ष हिंदू धर्म महासभा की अध्यक्षता करते हुए व्याख्यान हेतु पधारे। वहाँ देश के विभिन्न जागीरदारों ने उन्हें कवि भूषण की उपाधि से सम्मानित किया। सभी राजा, महाराजा एक समस्या में उलझ रहे थे। उसका समाधान उपस्थित विद्वानों से चाहा, सभी अंग्रेजों से मुक्त भारत चाहते थे। उल्लेखनीय है कि उस दौर में समस्यापूर्ति एक काव्य की प्रचलित शैली थी, जिसमें दिए गए काव्यांष के आधार पर छंद की रचना करनी होती थी।

समस्या थी - जम्बूक जाइ आकाश में रोयो।

इस समस्या की पूर्ति हेतु नवल सिंह जोगनी ने समस्या पूर्ति दृष्टव्य सभा में उपस्थित सभी राजाओं के सम्मुख प्रस्तुत की। उसे यहाँ उद्धृत करना आवश्यक है। जो इस प्रकार है -

पौन सुमेरु के होड़ पड़ी जब पौन असीम पराक्रम जोयो।
मेरु सहाय करि खगराज ने पंख पसारि तिहि पर सोयो।
मेरु मंऐज धरयो मन में खग टारि खगेश गिरिगर्व खोयो।
श्रृंग सुमेरु हो टूटी उड़यो जब जम्बूक जाइ आकाश में रोयो।

आगरा से प्रकाशित राजपूत पत्रिका में उन्होंने अपने विभिन्न लेखों द्वारा भी सबको जागृत किया, आपने उस पत्रिका में संपादकीय भी लिखा। जुलाई 1902 के अंक में पंजाब और उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजाओं के स्टेट में जाकर के व्याख्यान देने की बातों उल्लेख है, जो पत्रिका मे प्रकाशित किया गया है।

परिवर्तिनि संसारे मृतरू की वा न जायते।
सजातो येन जातेन याति वंशरू समुन्नतिम।।

तात्पर्य यह है कि उसी पुरूष का संसार में नाम लेना सफल हैं जिस के द्वारा अपनी मानव जाति की उन्नति हो, नहीं तो इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं जन्म लेता है और मरता है।

कोई भी देश धन सम्पन्न उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि कृषि, शिल्प और वाणिज्य की उन्नति न हो। कवि भूषण नवल सिंह प्रथम विश्व युद्ध व द्वितीय विश्व युद्ध के साक्षी रहे। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) की विभीषिका में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और संपूर्ण भू-भाग में जाकर सभी को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया और आजाद स्वतंत्र भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया। उस समय अंग्रेजों ने अलवर और यहाँ के राजाओं की शक्ति को कम करके वहाँ के सभी राजा रजवाड़ों को पूरे प्रांत में अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित कर देने की चाल चली।

ऐसे समय में नवलजी ने भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया, यही नहीं आपने दक्षिण भारत में मैसूर और उत्तर पूर्व के आसाम व बंगाल वर्तमान बांग्ला देश और जो अभी पाकिस्तान में है मुजफ्फराबाद (जो कि पाक अधिकृत कष्मीर में है)तक की यात्राएँ भी कीं। कवि भूषण नवल सिंह जोगणी, जागीर सलूंबर, मेवाड़ को हम स्वराज के रक्षक तथा स्वतंत्रता संग्राम के अनकहे नायक के रूप में देखते हैं। आपने अपनी जन-जागरण यात्राओं के दौरान मानवीय सरोकार से ओतप्रोत होकर राष्टीऊय आंदोलन को गतिषील रखा।

पंडित मदनमोहन मालवीय जिन्होंने सेन्ट्रल हिंदू कालेज बनारस को बदलकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी की स्थापना की। उनका जन्म सन् 1861 मे हुआ व निर्वाण सन् 1946 में। कवि भूषण नवलसिंह जोगणी भी उनके समकालीन ही रहे हैं। इन महापुरुषों से भी निश्चित रूप से संवाद स्थापित रहा। चूंकि कवि भूषण नवल सिंह की जन-जागरण यात्राएँ अधिकतर उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों पर रही है। शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को जब फाँसी का फरमान जारी हुआ तो उस समय पंडित मदनमोहन मालवीय ने रुकवाने के लिए गम्भीर प्रयास किये थे, कवि भूषण नवल सिंह भी उनके समर्थन में साथ रहे परंतु फाँसी रुकवाने में सफलता नहीं मिली। इसी सेंट्रल हिंदू कॉलेज बनारस में कवि भूषण नवलसिंह जोगणी ने अनेक बार व्याख्यान दिए हैं। कालान्तर में यूपी सेंट्रल हिंदू कॉलेज बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी के रूप में पंडित मदन मोहन मालवीय ने नींव रखी। इससे स्पष्ट होता है कि कवि भूषण नवल सिंह जोगणी व पंडित मदनमोहन मालवीय दोनों ने साथ मिलकर राष्ट्रीय उत्थान में अपने जीवन को आहूत किया।

नवलसिंह जी स्वामी विवेकानंद के विचारों से भी प्रभावित हुए और रामकृष्ण मिषन के कार्यों को आगे बढ़ाने में भी आपने योगदान दिया। स्वामी विवेकानंद का जन्म सन् 1863 में हुआ तथा वे भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति की जीवंत प्रतिमूर्ति थे, जिन्होंने संपूर्ण विश्व को भारत की संस्कृति, धर्म के मूल आधार और नैतिक मूल्यों से परिचय कराया। स्वामीजी वेद, साहित्य और इतिहास की विधा में निपुण थे। स्वामी विवेकानंद ने सयुंक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में हिन्दू आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार प्रसार किया। उनका जन्म कलकत्ता के उच्च कुलीन परिवार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। युवावस्था में वह गुरु रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आये और उनका झुकाव सनातन धर्म की और बढ़ने लगा उस समय कवि भूषण नवलसिंह जोगणी निश्चित रूप से एक दूसरे के संपर्क में रहे होंगे इसकी प्रारंभिक तौर पर जानकारी प्राप्त हुई है।

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को फिरोजपुर जिले के धुडिके गाँव में मुंशी राधाकृष्ण आजाद और गुलाब देवी के यहाँ हुआ था। मुंशी आजाद फारसी और उर्दू के विद्वान थे। लालाजी की माँ एक धार्मिक महिला थीं, जिन्होंने अपने बच्चों में मजबूत नैतिक मूल्यों को विकसित किया। उनके पारिवारिक मूल्यों ने लाजपत राय को विभिन्न विश्वासों और विश्वासों की स्वतंत्रता की अनुमति दी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल रेवाड़ी में प्राप्त की, जहाँ उनके पिता शिक्षक के रूप में पदस्थ थे। लाजपत राय ने लॉ की पढ़ाई के लिए सन् 1880 में लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला लिया, कॉलेज में रहते हुए वे लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त और कवि भूषण नवलसिंह जोगणी जैसे देशभक्तों और भविष्य के स्वतंत्रता सेनानियों के संपर्क में आए। सन् 1920 में अमेरिका से लौटने के बाद लाजपत राय को कलकत्ता अब कोलकाता में कांग्रेस के विशेष सत्र की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में पंजाब में उग्र प्रदर्शन किया। जब महात्मा गांधी ने सन् 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू किया तो उन्होंने पंजाब में इस आंदोलन का नेतृत्व किया उस समय कवि भूषण नवल सिंह जोगणी पंजाब में थे निश्चित रूप से वह एक दूसरे के संपर्क में रहे होंगे यह उनके संबंधों का परिचायक लगता है, यह सब शोध का विषय है, इसमें किसी आज के विद्यार्थी को रुचि लेकर के आगे बढ़ना चाहिए। जब गांधी ने चौरीचौरा की घटना के कारण भारत छोड़ो आंदोलन को स्थगित करने का फैसला किया, तो लाजपत राय ने फैसले की आलोचना की और कांग्रेस स्वतंत्र पार्टी का गठन किया। साइमन कमीशन ने सन् 1929 में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने के उद्देश्य से भारत का दौरा किया, यह तथ्य है कि आयोग में केवल ब्रिटिश प्रतिनिधि शामिल थे एक भी भारतीय को इसमें जगह नहीं दी गयी थी जिसने भारतीय नेताओं को बहुत नाराज किया और देश में विरोध के प्रदर्शन भड़क गये और लाला लाजपत राय इस तरह के प्रदर्शनों में सबसे आगे थे। अपनी देष-व्यापी यात्राओं में नवलसिंहजी क्रांतिकारियों और आंदोलनकारियों के सहयोगी की भूमिका निभाते रहे।

विक्रम, कालिदास और उज्जयिनी नगरी हमारे स्वाभिमान, शौर्य और स्वर्णयुग के अभिमान के पर्याय हैं।

उसी उज्जयिनी में जन्मे पद्मभूषण पंडित सूर्यनारायण व्यास ने विक्रम संवत् के दो हजार वर्ष पूर्ण होने पर एक मासिक पत्र विक्रम का प्रकाशन आरम्भ किया। पंडित व्यास भी कवि भूषण नवल सिंह जी के कृतित्व से प्रभावित रहे। पंडित सूर्यनारायण व्यास का अपना निजी प्रेस था जहाँ से वे अपने पंचांग का प्रकाषित करते थे। विक्रम मासिक पत्र का प्रकाशन एक विशेष उद्देश्य को लेकर किया गया था। विशेषकर उन दिनों जब चाँद, हंस, वीणा, माधुरी, सुधा, सरस्वती जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका हिंदी में सुस्थापित थी। इन सभी पत्रिकाओं मे कवि भूषण नवल सिंह जोगणी मेवाड़ के व्याख्यान व भाषणों के प्रकाषन और जन जागरण के कार्यों की जानकारी मिलती है। पंडित व्यास का उज्जैन जैसे छोटे.से कस्बे में विक्रम का प्रकाशन दुस्साहस का कार्य ही था।

कवि भूषण नवल सिंह का वैचारिक अवदान

कवि भूषण नवल सिंह के उपदेश और जो व्याख्यान होते थे उसमें महात्मा बुद्ध के सदुपदेश भी शामिल होते थे। जिसमें उनका मंतव्य था कि किसी का वध मत करो, वरन दूसरे के जीवन का ध्यान रखो, चोरी मत करो, किसी को परेशान मत करो, फौरन प्रत्येक मनुष्य की सहायता करो, सर्व प्रकार की अपवित्रता से वंचित रह कर पवित्र जीवन निर्माण करो, झूठ मत बोलो, सच संभाषण हो, सत्य का विचारपूर्वक संभाषण करो, ऐसा सत्य संभाषण करने से अपने जीवन को उन्नत बनाओ, किसी के विरुद्ध बुराई की खबर हो तो मत उठाओ, ना उन्हें देर देर तक उच्चारण करो, किसी मनुष्य के दोष को मत ढूँढों वरन उसके शुभ गुणों की खोज करो ताकि जब कभी उस व्यक्ति का कोई शत्रु उसके दोस्त को कथन करने लगे तो उस समय तुम उसकी ओर से कुछ शत्रु के प्रतिवाद से प्रतिवाद कर सको, सौगंध मत खाओ वरन सफाई के साथ और सम्मानपूर्वक बोलो, निष्प्रयोजन बातों को बोलकर अपना समय व्यतीत मत करो वरन आवश्यकतानुसार संभाषण करो, निष्प्रयोजन बोलने से चुप रहना उत्तम है, लालच मत करो ना किसी से द्वेष रखो और दूसरे मनुष्य की धन-संपत्ति देखकर आनंद को प्राप्त ही करो, अपने मैल को साफ कर डालो, अपने मन से क्रोध बेर और निररर्थकता को दूर करो, उन लोगों से भी जो तुम पर कलंक लगाते हैं और तुम्हें हानि पहुँचाते हैं घृणा मत रखो वरना सब जीवधारी मात्र की कृपापूर्वक तथा उदारचित्त से अपनी छाती से लगाओ, अज्ञानता को मन से दूर करो सत्य को सीखने की चेष्टा करो विशेषतया आवश्यकता की एक वस्तु की सत्यता को सीखने की चेष्टा करो नहीं तो ऐसा ना हो कि तुमको संदेह या भूल में पड़ा रहना पड़े, संदेह तुम्हें उदासीन बना देगा और भूल तुम्हें बर्बाद कर देगी जिससे तुम उस उत्तम मार्ग को जो निर्माण पर ले जाये, प्राप्त नहीं कर सकोगे।

(शेष पृष्ठ >>6 पर)

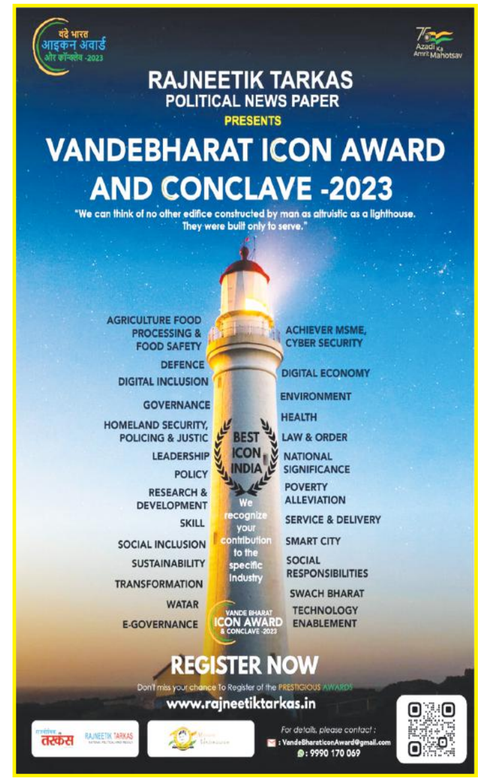

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

(पृष्ठ ›› 5 का शेष) आपके इष्ट ऋषभदेव केसरिया जी मंदिर का रहा और आराध्य एकलिंग नाथ रहे, आपने बहुत सारी पुस्तकों का लेखन किया, बहुत सारे आलेख भी लिखे जिस पर सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में भी शोध हुआ। आपने केसरिया कल्पद्रुम पुस्तक में अपने आध्यात्मिक अनुभवों और बातों को उल्लेखित किया, पुस्तक को पढ़ने पर राष्ट्रीय भावनाओं की जानकारी मिलती है। उनका व्यक्तित्व ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करते हुए मानवता के लिए समर्पित रहा। आपने पंजाब की यात्रा के दौरान रू 10 का मनी आर्डर सन् 1990 में अपने गाँव में किसी किसान की मदद के लिए भेजा उसकी पावती की प्रतिलिपि भी अभी संरक्षित है। राजस्थान के अलवर के जवाली ठिकाने में चारभुजा नाथ के मंदिर में सभी क्षत्रीय बंधुओं और सभी जाति वर्ण के लोगों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय एकता के लिए आह्वान किया। आप महाराष्ट्र के संत टुकड़ोंजी के संपर्क में भी रहे, संत टुकड़ोंजी महात्मा गांधी से जुडे रहे थे, संत टुकड़ोंजी के नाम से महाराष्ट्र में विश्वविद्यालय आज भी संचालित है। संत टुकड़ोंजी महाराज ने अपनी जापान यात्रा भी की उस समय उन्होंने स्वतंत्रता की अलख जगाने के लिए कवि भूषण नवल सिंह से संपर्क किया। कवि भूषण नवल सिंह ने महाराष्ट्र के विभिन्न जागीरदारों और विभिन्न धर्म और संप्रदाय के लोगों से भी संपर्क स्थापित किया। गुजरात में बड़ौदा नरेश के यहाँ भी उनका प्रवास रहता था आज भी बड़ौदा नरेश के वहाँ पर उनके रुकने की एक हवेली है जो बड़ौदा महाराज ने निर्माण करके उनके ठहरने की व्यवस्था के लिए दी। आप राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के भी प्रेरणा स्त्रोत रहे व आपके पुत्र तखत सिंह जो मोहनलाल सुखाड़िया के बहुत अभिन्न रहे। उन्होंने हमेशा ही सुखाड़िया साहब को कवि भूषण नवल सिंह के प्रेरक व्यक्तित्व से परिचित करवाया।

प्रथम विश्व युद्ध में आपने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा दलितों का सामाजिक जागरण किया। सन् 1901 में प्रकाशित पत्रिका 'सरस्वती' में जापान में कृषि शिक्षा की उन्नति के विषय में लेख प्रकाषित हुआ था। जापान की कृषि शिक्षा और वहाँ की शिक्षा प्रणाली के बारे में कवि भूषण नवल सिंह ने अपने यहाँ के बहुत सारे विद्यार्थियों और बालकों को जापान चलने के लिए और वहाँ जाकर के शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। अपने विभिन्न व्याख्यान में उन्होंने सब को जागरूक किया। उस समय जापान जाने का जहाज का तीसरे दर्जे का किराया रू. 130 और दूसरे दर्जे का किराया रू. 270 था। उस समय कोलकाता या मुंबई बंदरगाह से याकोहामा जाने का मार्ग था। जहाज द्वारा तीन माह में जापान पहुँचा जा सकता था, याकोहामा से टोक्यो पहुँचने का समय केवल दो-तीन घंटे है। उन्होंने सभी को जागरूक किया कि जापान की शिक्षा का 3 टर्म की शिक्षा होती है जापान में पहला टर्म 105 दिन का होता है दूसरा टर्म 94 दिन का होता है और तीसरा टर्म 10 दिन का। उन्होंने अपने व्याख्यान में भारत के विद्यार्थियों को जापान में जाकर कल कारखानों में ट्रेनिंग लेने के लिए भी प्रेरित किया और काफी विद्यार्थी जापान गए। उनकी यह योजना थी कि हमारी युवा पीढ़ी निपुण और कुशाग्र बुद्धिवाली बने और भारत राष्ट्र स्वतन्त्र राष्ट्रीय अस्मिता के अभ्युदय को हम अतिशीघ्र ही देखें।

कवि भूषण नवल सिंह प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि-लेखक रहे। उनकी अनेक रचनाएँ पुस्तकों के रूप में प्राप्त हुई हैं उनमें से कुछ पुस्तकों के प्रामाणिक दस्तावेज हमें मिलें हैं। जो इस प्रकार है

1. आरोग्य जीवन
2. केसरिया कलपद्रुम
3. सनातन धर्म सार
4. मेवाड़ का इतिहास

'सनातन धर्म-सार' एक नीतिपरक काव्य रचना है जो ज्ञान और उपासना के द्वारा सगुण और निर्गुण ब्रह्म की व्याख्या कर सत्य के रूप को उजागर करती है। सरदार पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल में रहे। हालांकि जिस चीज के लिए इतिहासकार हमेशा सरदार वल्लभ भाई पटेल के बारे में जानने के लिए इच्छुक रहते हैं, वह थी उनकी और जवाहरलाल नेहरू की प्रतिस्पर्द्धा। सब जानते हैं कि 1929 के लाहौर अधिवेशन में सरदार पटेल ही गाँधी जी के बाद दूसरे सबसे प्रबल दावेदार थे, किन्तु मुस्लिमों के प्रति सरदार पटेल की हठधर्मिता की वजह से गाँधीजी ने उनसे उनका नाम वापस दिलवा दिया।

सरदार पटेल के विचार हमेशा हमें झकझोरते हैं कि जीवन की डोर तो ईश्वर के हाथ में है, इसलिए चिंता की कोई बात हो ही नहीं सकती, कठिन समय में कायर बहाना ढूँढ़ते हैं बहादुर व्यक्ति रास्ता खोजते हैं, उतावले उत्साह से बड़ा परिणाम निकलने की आशा नहीं रखनी चाहिये, हमें अपमान सहना सीखना चाहिए, बोलने में मर्यादा मत छोड़ना, गालियाँ देना तो कायरों का काम है, शत्रु का लोहा भले ही गर्म हो जाये, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है, अन्याय का मजबूत हाथों से सामना कीजिये, हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह यह अनुभव करे की उसका देश स्वतंत्र है और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका कर्त्तव्य है। हर एक भारतीय को अब यह भूल जाना चाहिए कि वह एक राजपूत है, एक सिख या जाट है. उसे यह याद होना चाहिए कि वह एक भारतीय है और उसे इस देश में हर अधिकार है। पर कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। एकता के बिना जनशक्ति, शक्ति नहीं है जब तक उसे ठीक ढंग से सामंजस्य में ना लाया जाए और एकजुट ना किया जाए, और तब यह आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है। कवि भूषण नवल सिंह एक निस्वार्थ, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय व्यक्तित्व थे, जिन्होंने देश के हितों को हर चीज से ऊपर रखा और भारत की नियति को भक्ति के साथ आकार दिया। आधुनिक और एकीकृत भारत के निर्माण में कवि भूषण नवल सिंह का सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ अमूल्य योगदान है।

कविभूषण नवलसिंह ने भारत भर में सूदूर स्थानों पर राष्ट्रीय जागरण के लिए अनेक व्याख्यान दिए। इन व्याख्यानों ने लोगों के मन में ऊर्जा का संचार किया और अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए तैयार किया। आपके व्याख्यान मंदिरों, धर्मशालाओं, विद्यालयों, कालेजों, गुरूकूल और मठों इत्यादि स्थानों पर हुए। आपकी कविताओं, लेखों और व्याख्यानों ने युवकों में देषसेवा और देषप्रेम की भावना को जगाया।

संदर्भ

1. राजपूत पाक्षिक पत्रिका राष्ट्रीय क्षत्रिय महासभा द्वारा राजपूत एंग्लो ओरियंटल प्रेस आगरा द्वारा प्रकाशित, भाग 4, आगरा जुलाई सन् 2. देश के विभिन्न रजवाड़ों के संग्रहालय व रिकार्ड से उद्धत।
3. पीएच डी थिसीज डॉ कल्याण सिंह राव, सन् 2010।
4. आरोग्य जीवन ए श्री रतन प्रिंटिंग प्रेस रतलाम सन् 1915।
5. केसरिया कलपद्रुम, श्री उम्मेद प्रेस कोटा, सन् 1938।
6. संग्रहालय मेवाड़।
7. सरस्वती लाइब्रेरी गुलाब बाग, मेवाड़।
8. संग्रहालय, वेदिक महाविद्यालय लाहोर।
9. संग्रहालय, हिन्दू सेन्ट्रल कालेज, बनारस। (वर्तमान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)।
10. विभिन्न वेबसाइट राजघरानों से सम्बन्धित।
11. प्राचीन संग्रहालय संत टुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय महाराष्ट्र ।
12. दरभंगा स्टेट रिकार्ड, बिहार।
13. कानोड़ स्टेट रिकार्ड, मेवाड़।
14. होल्कर स्टेट रिकार्ड, इंदौर, मध्यप्रदेश।
15. कवि भूषण नवल सिंह जोगणी परिवार से उपलब्ध रिकार्ड।
16. भारत धर्म महामण्डल द्वारा प्रकाशित प्राचीन साहित्य।
17. अखिल भारतवर्ष क्षत्रीय महासभा द्वारा प्रकाशित प्राचीन साहित्य ।

लेखक परिचय:

प्रोफेसर डॉ. राव गोविंद सिंह भारद्वाज प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय विद्वान वैज्ञानिक हैं। उनका जन्म कवि भूषण नवल सिंह जोगनी के जन्म के ठीक 100 साल बाद 1957 में हुआ था उन्होंने 350 से अधिक शोध पत्र, लेख, पुस्तकें प्रकाशित की हैं और विदेशों में अंतर्राष्ट्री सम्मेलनों में प्रमुख भाषण दिए हैं। भू-तकनीकी, पर्यावरण, भूजल, खनन, नगर नियोजन के क्षेत्र में वैज्ञानिक विकास के बारे में जन जागरूकता के लिए रेडियो और टेलीविजन वार्ता दी। उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय ने उन्हें दो बार सर्वश्रेष्ठ प्रोफेसर के रूप में सम्मानित किया। उनका यू ट्यूब चैनल समाज को शिक्षित करने के लिए समर्पित है। वे प्रतिष्ठित पेशेवर और वैज्ञानिक समाजों और संगठनों के सदस्य हैं। राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान के रूप में चरित्र निर्माण में बहुत योगदान दिया। लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, नेशनल अवार्ड माइनिंग, जियोलॉजी एंड मेटलर्जिकल इंस्टीट्यूट ऑफइंडिया से सम्मानित।

बचपन से ही उनके परदादा के रूप में कवि भूषण नवल सिंह जोगनी के महान योगदान के बारे में सुना और वे कवि भूषण नवल सिंह को जानने के लिए उत्सुक हो गए। व कवि भूषण नवल सिंह के बारे में पता लगाने की कोशिशें की हैं। उनकी शोधकर्ताओं से ऐसे गुमनाम नायकों का पता लगाने की अपील है। उनके शोध आलेख तथा दृढ़ संकल्प ने शोधकर्ताओं को ऐसे देशभक्त गुमनाम नायकों के बारे में पता लगाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया हैं।

आचार्य बालकृष्ण को मिला यू एन हेल्थकेयर अवार्ड

योग को पूरे विश्व में एक आंदोलन के रूप में प्रचारित एवम प्रसिद्वि दिलाने वाले योग गुरू रामदेव और उनकी पूरी टीम ने सचमुच में उस समय अपने देश का मान बढ़ा दिया जब आचार्य बाल कृष्ण को आयुर्वेद एवम् योग के क्षेत्र में नए शोध और विभिन्न उपलब्धियों के लिए यूएनओ की संस्था यूनाइटेड नेशन सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स ने पुरस्कृत किया। इस सम्मान को प्राप्त करने के बाद पंतजलि के आचार्य बाल कृष्ण ने विनम्रता पूर्वक इस अंतर्राष्टीय पुरस्कार को अपनी संस्था और समस्त योगार्थियों को समर्पित करते हुए कहा कि यह अपने देश की महान परंपराओं का विश्व पटल पर एक अनुमोदन है।

वहीं बाबा रामदेव ने अपने सहयोगी आचार्य बालकृष्ण को उनके विशिष्ठ स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मिले इस पुरस्कार और विश्व के टॉप 10 महान हस्तियों में शामिल होने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि बालकृष्ण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रथम बार आयोजित इस तरह के

समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि यह भारत का प्रयास है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में योग व भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्वति के जरिए गंभीर से गंभीर बीमारियों के बीच एक सुरक्षा कवच तैयार करने का काम

किया है जिसपर आज पूरे विश्वजनमत की मोहर लगी है। दरअसल पतंजलि विभिन्न तरह के आयुर्वेदिक दवायें व दूसरे हेल्थ केयर प्रोडक्ट बनाती हैं जिसे आज अपने देश में ही बल्कि पूरे विश्व में भी प्रयोग किया जा रहा है। स्वीटजरलैंड की राजधानी जेनेवा में स्थित यूएन मुख्यालय में संपन्न यूएनएसडीजी 10 मोस्ट इंफ्लूएंसियल पीपल इन हेल्थकेयर अवार्ड में बाबा रामदेव के सबसे करीबी और पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर बालकृष्ण को आयुर्वेद जगत में उनके योगदान के लिए यह पुरस्कार दिया गया। इस पुरस्कार को आचार्य बालकृष्ण ने उन सभी शोधकर्ता और सहयोगियों के नाम किया जिन्होंने योग और आयुर्वेद को दुनिया की मुख्यधारा से जोड़ने में उनकी मदद की। उन्होंने ट्वीट करते हुए कहा कि मुझे विश्व समुदाय के समक्ष भारतीय संस्कृति और योग, आयुर्वेद की महान परंपरा का पक्ष पेश करते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है और इतने विशिष्ठ लोगों ने मेरी बात को गंभीरता पूर्वक सुना जिसके लिए मैं आभारी हूं।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
7
वर्ष : 01 , अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

राजस्थान में कितना सफल होगा तीसरा मोर्चा ?

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में विधानसभा के चुनाव होने में अभी एक साल से अधिक का समय बाकी है। मगर चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों ने अभी से अपनी तैयारियां शुरू कर दी है। राजस्थान में मुख्य मुकाबला कांग्रेस व भाजपा के बीच ही होता रहा है, क्योंकि यहां तीसरा मोर्चा नहीं बन पाया है। जिसका लाभ भी कांग्रेस व भाजपा को ही मिलता रहा है। इसी कारण 1993 से यहां एक बार भाजपा व एक बार कांग्रेस की सरकारी बनती आ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में हनुमान बेनीवाल ने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाकर 58 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मगर उन्हें तीन सीट व 2.4 प्रतिशत वोट मिले थे। इसी तरह भाजपा से बगावत कर घनश्याम तिवाड़ी ने भी भारत वाहिनी पार्टी के नाम से राजस्थान में 63 विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे थे। मगर तिवाड़ी सहित सभी की जमानत हो गई थी।

पिछले विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी (आप) ने भी पूरे जोर-शोर से चुनाव लड़ा था। मगर उनका कोई भी प्रत्याशी 1000 वोटों की संख्या पार नहीं कर पाया था। यहां तक कि पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रामपाल जाट भी मात्र 628 वोट की ले पाए थे। प्रदेश में आप को 136345 यानि मात्र 0.38 प्रतिशत वोट मिले थे। पिछले विधानसभा चुनाव में बसपा के छह विधायक जीते थे। मगर इसे बसपा का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि हर बार की तरह इस बार भी बसपा के सभी 6 विधायकों ने दल बदल कर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। जिस कारण जीतकर भी बसपा खाली हाथ रह गई थी। पिछले चुनाव में बसपा को 4.03 प्रतिशत मत मिले थे।

आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में चुनाव लड़ने की पूरी तैयारी कर रही है। हालांकि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने के चर्चा जोरों से चल रही है। ऐसे में यदि वह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन जाते हैं तो सचिन पायलट के मुख्यमंत्री बनने की सबसे अधिक संभावना जताई जा रही है। चूंकि अशोक गहलोत किसी भी स्थिति में पायलट को राजस्थान का नेतृत्व नहीं सौंपेंगे। ऐसे में गहलोत की पसंद का ही मुख्यमंत्री बनेगा।

अभी राजस्थान में गहलोत बनाम पायलट का झगड़ा जोरों पर चल रहा है। दोनों के समर्थक एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। हाल ही में गुर्जर नेता किरोड़ी सिंह बैंसला की श्रद्धांजलि सभा के दौरान पुष्कर में पायलट समर्थकों ने गहलोत समर्थक मंत्री अशोक चांदना व शकुंतला रावत के भाषण देने के दौरान नारेबाजी की व जूते चप्पले उछाली। इतना ही नहीं कार्यक्रम में उपस्थित मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत व राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़ को बिना भाषण दिए ही वहां से जाना पड़ा। इन दिनों पायलट समर्थक अपने नेता के पक्ष में खुलकर मुखर हो रहे हैं। वह चाहते हैं कि राजस्थान की कमान पायलट को सौंपी जाएं।

गहलोत समर्थक राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष खिलाड़ी लाल बैरवा भी खुलकर पायलट को मुख्यमंत्री बनाने की मांग करने लगे हैं। बैरवा का कहना है कि गहलोत को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना चाहिए तथा राजस्थान का मुख्यमंत्री सचिन पायलट को बनाया जाना चाहिए जिससे पार्टी मजबूत होगी। गत दिनों पायलट के जन्मदिन के अवसर पर गहलोत समर्थक सात विधायकों ने भी पायलट के घर जाकर उनको बधाई देकर सबको चौंका दिया था।

मुख्यमंत्री गहलोत राजनीति की एक-एक चाल सोच समझ कर चल रहें हैं। हाल ही में उन्होने प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नवनिर्वाचित सदस्यों की मीटिंग में मौजूद लोगों से राहुल गांधी को पार्टी अध्यक्ष बनाए जाने पर राय जानी तो सबने हाथ खड़े करके समर्थन किया। राहुल गांधी को अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव प्रदेश रिटर्निंग ऑफिसर के जाने के बाद रखा गया था। ऐसे में यह प्रस्ताव दिल्ली नहीं भेजा जाएगा। लेकिन गहलोत ने राहुल गांधी के प्रति समर्थन जताकर सियासी तौर पर एक संदेश तो दे ही दिया है।

"1993 से यहां एक बार भाजपा व एक बार कांग्रेस की सरकारी बनती आ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में हनुमान बेनीवाल ने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाकर 58 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मगर उन्हें तीन सीट व 2.4 प्रतिशत वोट मिले थे। इसी तरह भाजपा से बगावत कर घनश्याम तिवाड़ी ने भी भारत वाहिनी पार्टी के नाम से राजस्थान में 63 विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे थे। मगर तिवाड़ी सहित सभी की जमानत हो गई थी। पिछले विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी (आप) ने भी पूरे जोर-शोर से चुनाव लड़ा था। मगर उनका कोई भी प्रत्याशी 1000 वोटों की संख्या पार नहीं कर पाया था।

गहलोत चाहते हैं कि यदि उनको पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना पड़े तो भी मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी उनके पास ही रहे। यदि मुख्यमंत्री बदलने की बात आती है तो उनकी राय को तवज्जो दी जाए। गहलोत किसी भी सूरत में सचिन पायलट को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इन दिनो गहलोत समर्थक नेता पायलट को बाहरी बता कर विरोध करने लगे हैं।

भाजपा में नेताओं की लड़ाई समाप्त नहीं हो पाई है। पार्टी नेताओं में एकजुटता करवाने के लिए पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को बार-बार राजस्थान आकर समझाइश करनी पड़ रही है। यहां वसुंधरा राजे चाहती है कि एक बार फिर उनको ही मुख्यमंत्री बनने का मौका मिले। वसुंधरा समर्थकों का मानना है कि राजस्थान में आज भी सबसे बड़ा चेहरा वसुंधरा राजे ही है जिनका प्रदेश की जनता पर प्रभाव है। यदि वसुंधरा को आगे रखकर पार्टी चुनाव लड़ती है तो कांग्रेस को आसानी से हराया जा सकता है।

वहीं राजे विरोधी धड़ा किसी भी सूरत में वसुंधरा को आगे नहीं करना चाहता है। इसीलिए पार्टी आलाकमान ने राजस्थान में मोदी के नाम पर चुनाव लड़ने की बात कही है। राजस्थान के लोगों का मानना है कि अशोक गहलोत व वसुंधरा राजे में पर्दे के पीछे आपसी तालमेल है। इसी कारण एक बार गहलोत और एक बार वसुंधरा मुख्यमंत्री बन रही है। आपसी तालमेल के चलते ही दोनों एक दूसरे के खिलाफ कोई कार्यवाही भी नहीं करते हैं। प्रदेश की जनता इसे दोनो नेताओं का मिलाजुला खेल मानती है।

नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी भी विधानसभा चुनाव की तैयारी कर रही है। मगर इनका जाट बेल्ट में ही अधिक प्रभाव है। पिछली बार उन्होंने तीन विधानसभा सीटें जीती थी। लोकसभा चुनाव में बेनीवाल ने भाजपा से गठबंधन कर नागौर लोकसभा सीट जीती थी। मगर इस बार अकेले चुनाव लड़ा तो मुकाबला कड़ा होगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आप पार्टी इस बार राजस्थान में पूरी गंभीरता से चुनाव लड़ने जा रही है। इसी के चलते अक्टूबर में अरविंद केजरीवाल लगातार दो दिन राजस्थान का दौरा करेंगे। आप नेता देवेंद्र शास्त्री का कहना है कि इस बार हमारी पार्टी पूरी गंभीरता से राजस्थान में चुनाव लड़ेगी और जनता को एक तीसरा विकल्प देगी। कांग्रेस और भाजपा के मिले-जुले खेल से ऊब चुकी प्रदेश की जनता को हम एक नया विकल्प देंगे। जो प्रदेश में समुचित विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष व सांसद असदुद्दीन ओवैसी भी राजस्थान पर अपनी नजर गड़ाए हुयें हैं। हाल ही में उन्होंने राजस्थान का दो दिवसीय दौरा कर जयपुर, सीकर, झुंझुनू, नागौर जिले की कई मुस्लिम बहुल सीटों पर लोगों से संपर्क कर जनसभाएं की थी। उनकी सभाओं में उमड़ी भीड़ को देख कर बड़े राजनीतिक दलों के कान खड़े हो गए हैं। ओवैसी ने जहां भाजपा पर तो हमला बोला ही उसके साथ ही उन्होंने राजस्थान की कांग्रेस सरकार व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को भी जमकर कटघरे में खड़ा किया। ओवैसी की पार्टी राजस्थान में अपने पांव जमाने में सफल होती है तो इसका सीधा नुकसान कांग्रेस को होगा।

प्रदेश के आदिवासी बेल्ट में पिछली बार भारतीय ट्राइबल पार्टी (बीटीपी) ने 11 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतार कर दो सीटों पर जीत हासिल की थी। मगर इस बार आदिवासी क्षेत्र में भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) का गठन किया गया है। जिसमें बीटीपी के दोनों विधायक भी शामिल हो गए हैं। भारतीय आदिवासी पार्टी प्रदेश की तीन दर्जन सीटो पर अपने प्रत्याशी खड़े करने जा रही है। जिससे आदिवासी क्षेत्र में सभी बड़ी पार्टियों का खेल बिगड़ेगा।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लिए देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

अखाड़ेबाजी में उलझे हुए हैं टीवी चैनल

डॉ वेदप्रताप वैदिक

हमारे टीवी चैनलों की दशा कैसी है, इसका पता सर्वोच्च न्यायालय में आजकल चल रही बहस से चल रहा है। अदालत ने सरकार से मांग की है कि टीवी चैनलों पर घृणा फैलानेवाले बयानों को रोकने के लिए उसे सख्त कानून बनाने चाहिए। पढ़े हुए शब्दों से ज्यादा असर, सुने हुए शब्दों का होता है। टीवी चैनलों पर उंडेली जानेवाली नफरत, बेइज्जती और अश्लीलता करोड़ों लोगों को तत्काल प्रभावित करती है। अदालत ने यह भी कहा है कि टीवी एंकर अपने चैनल की टीआरपी बढ़ाने के लिए उटपटांग बातें करते हैं, वक्ताओं का अपमान करते हैं, ऐसे लोगों को बोलने के लिए बुलाते हैं, जो उनकी पनपसंद बातों को दोहराते हैं। अदालत ने एंकरों की खिंचाई करते हुए यह भी कहा है कि वे लोग वक्ताओं को कम मौका देते हैं और अपनी दाल ही दलते रहते हैं। असलियत तो यह है कि आजकल भारत के लगभग सारी टीवी चैनल अखाड़ेबाजी में उलझे हुए हैं। एक-दो चैनल अपवाद हैं लेकिन ज्यादातर चैनल चाहते हैं कि उनके वक्ता एक-दूसरे पर चीखे-चिल्लाएं और दर्शक लोग उन चैनलों से चिपके रहें। हमारे चैनलों पर आजकल न तो विशेषज्ञों को बुलाया जाता है और न ही निष्पक्ष बुद्धिजीवियों को! पार्टी-प्रवक्ताओं को बुलाकर चैनलों के मालिक अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं। इसीलिए हमारे टीवी चैनलों को, जैसे अमेरिका में पहले कहा जाता था, 'इडियट बॉक्स' याने 'मूरख बक्सा' कहा जाने लगा है। भारत के विधि आयोग ने सुझाव दिया था कि भारतीय दंड संहिता में एक नई धारा जोड़कर ऐसे लोगों को दंडित किया जाना चाहिए, जो टीवी चैनलों से घृणा, अश्लीलता, अपराध, फूहड़पन और सांप्रदायिकता फैलाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय और विधि आयोग की यह चिंता

"टीवी पर बोला गया कौनसा शब्द उचित है या अनुचित, यह तय करना अदालत के लिए आसान नहीं है और अत्यंत समयसाध्य है। कोई कानून बने तो अच्छा ही है लेकिन उससे भी ज्यादा जरुरी यह है कि टीवी चैनल खुद ही आत्म-संयम का परिचय दें। पढ़े-लिखे और गंभीर लोगों को ही एंकर बनाया जाए। उन्हीं लोगों को बहस के लिए बुलाएँ, जो विषय के जानकार और निष्पक्ष हों। पार्टी-प्रवक्ताओं के दंगलों से बाज आएं। यदि उन्हें बुलाया जाए तो उनके बयानों को पहले रेकार्ड और संपादित किया जाएं।

और सलाह ध्यान देने योग्य है लेकिन उस पर ठीक ढंग से अमल होना लगभग असंभव है। टीवी पर बोला गया कौनसा शब्द उचित है या अनुचित, यह तय करना अदालत के लिए आसान नहीं है और अत्यंत समयसाध्य है। कोई कानून बने तो अच्छा ही है लेकिन उससे भी ज्यादा जरुरी यह है कि टीवी चैनल खुद ही आत्म-संयम का परिचय दें। पढ़े-लिखे और गंभीर लोगों को ही एंकर बनाया जाए। उन्हीं लोगों को बहस के लिए बुलाएँ, जो विषय के जानकार और निष्पक्ष हों। पार्टी-प्रवक्ताओं के दंगलों से बाज आएं। यदि उन्हें बुलाया जाए तो उनके बयानों को पहले रेकार्ड और संपादित किया जाएं। एंकरों को सवाल पूछने का अधिकार हो लेकिन अपनी राय थोपने का नहीं। हमारे टीवी चैनल भारतीय लोकतंत्र के सबसे मजबूत स्तंभ हैं। यदि इनकी हालत जैसी है, वैसी ही रही तो हमारा लोकतंत्र खोखला भी हो सकता है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
8
वर्ष : 01 , अंक : 04, नई दिल्ली, बुधवार, 19 अक्टूबर, 2022

भारत में कैंसर के बढ़ते मामले, समाज के स्वास्थ्य पर बोझ

सत्यवान 'सौरभ'

कैंसर के बढ़ते मामले हमारे समाज के स्वास्थ्य को खराब कर रहे हैं क्योंकि यह भारत में मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक बन गया है। भारत में हृदय रोग के बाद कैंसर मृत्यु का दूसरा सबसे आम कारण है। औसतन 1,800 से अधिक भारतीय प्रतिदिन कैंसर से मर रहे हैं। कैंसर के नए मामलों के साथ इसके 2025 तक 25% बढ़ने का अनुमान है, कैंसर धीरे-धीरे एक बड़ा हत्यारा बनता जा रहा है। भारत में कैंसर के कारणों को देखने और कैंसर की बढ़ती घटनाओं को रोकने के लिए कुछ उपायों की आवश्यकता है। भारत ने कई दशकों में कैंसर के मामलों में लगातार वृद्धि देखी है। 2017 की एक रिपोर्ट से पता चला है कि 1990 और 2016 के बीच, भारत में कैंसर का बोझ 2.6 गुना बढ़ गया और समय के साथ कैंसर से होने वाली मौतें दोगुनी हो गईं। इनमें से लगभग दो-तिहाई कैंसर के मामले अपने अंतिम चरण में हैं। पुरुषों में फेफड़े का कैंसर, मुंह का कैंसर, पेट का कैंसर आम है जबकि महिलाओं में स्तन, सर्वाइकल, ओवरी और गॉल ब्लैडर का कैंसर आम है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण पर संसदीय स्थायी समिति की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय कैंसर रोगियों में 'उच्च-स्तरीय' मानव विकास सूचकांक वाले देशों की तुलना में 20% अधिक कैंसर मृत्यु दर है। पैनल ने यह भी कहा है कि भारत का कैंसर देखभाल ढांचा 'बेहद अपर्याप्त' है और अधिकांश रोगियों को इलाज के लिए 'हजारों किलोमीटर' की यात्रा करने के लिए मजबूर करता है।

कैंसर रोगों का एक समूह है जिसमें शरीर के अंगों पर आक्रमण करने या फैलने की क्षमता के साथ असामान्य कोशिका वृद्धि होती है। संभावित संकेतों और लक्षणों में गांठ, असामान्य रक्तस्राव, लंबे समय तक खांसी, अस्पष्टीकृत वजन बढ़ना शामिल हैं। हालांकि ये लक्षण कैंसर का संकेत देते हैं, लेकिन ये अन्य कारणों से भी हो सकते हैं। 100 से अधिक प्रकार के कैंसर मनुष्यों को प्रभावित करते हैं। तंबाकू के सेवन से लगभग 22% से 25% कैंसर से होने वाली मौतों का कारण है। कैंसर से होने वाली 10% मौतों का कारण मोटापा, खराब आहार, शारीरिक गतिविधि की कमी या अत्यधिक शराब का सेवन है। अन्य कारकों में कुछ संक्रमण शामिल हैं जैसे आयनकारी विकिरण और पर्यावरण प्रदूषकों के संपर्क में आना। विकासशील देशों में, 15% कैंसर हेलिकोबैक्टर पाइलोरी, हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी, मानव पेपिलोमावायरस संक्रमण, एपस्टीन-बार वायरस और मानव इम्युनोडेफिशिएंसी वायरस (एचआईवी) जैसे संक्रमणों के कारण होते हैं। आमतौर पर, कैंसर विकसित होने से पहले कई आनुवंशिक परिवर्तन होते हैं। जरूरी है। लगभग 5-10% कैंसर किसी व्यक्ति के माता-पिता से वंशानुगत आनुवंशिक दोषों के कारण होते हैं। कैंसर के शुरूआती लक्षणों का पता चलने के बाद, आमतौर पर मेडिकल इमेजिंग द्वारा इसकी जांच की जाती है और बायोप्सी द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है।

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में शराब पीना, धूम्रपान और तंबाकू का सेवन भारत में पुरुषों में कैंसर का एक प्रमुख कारण है। इसके अलावा, निष्क्रिय धूम्रपान दूसरों के स्वास्थ्य को खतरे में डालता है, खासकर बच्चों और महिलाओं के लिए। धूम्रपान के रूप में तम्बाकू का प्रयोग भारतीय समाज में काफी प्रचलित है। कृषि में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग कैंसर के कारणों में से एक है। पंजाब से राजस्थान में बड़ी संख्या में ऐसे कैंसर रोगी होते हैं। उर्वरक विशेष रूप से खतरे में डालते हैं और गर्भवती महिलाओं में कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं। बदलती जीवनशैली और व्यस्त जीवनशैली के साथ शारीरिक व्यायाम के लिए समय न होने के साथ-साथ अस्वास्थ्यकर भोजन जैसे पिज्जा, बर्गर मोटापे का कारण बनते हैं जो कैंसर के लिए रास्ता आसान बनाते हैं। बड़ी मात्रा में लाल मिर्च का सेवन, बहुत अधिक तापमान पर भोजन और शराब का सेवन भारत में पेट के कैंसर के मुख्य जोखिम कारक हैं। पर्यावरण में बढ़ता प्रदूषण और हानिकारक रसायन एक अड़चन के रूप में कार्य करते हैं और इससे कैंसर, विशेषकर फेफड़ों के कैंसर का खतरा बढ़ गया है। अस्पतालों की अनुपलब्धता और खराब निदान उपकरण कैंसर को उच्च चरणों में फैलते हैं जहां इसका इलाज करना मुश्किल हो जाता है। स्क्रीनिंग के स्थापित लाभों के बावजूद, भारत में महिलाओं के लिए कवरेज कम है। जेब से अधिक खर्च इलाज को वहनीय नहीं बनाता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा अपर्याप्त है इसलिए लोग इलाज के लिए निजी अस्पतालों में जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक भारत में एक करोड़ मरीजों पर सिर्फ 2,000 कैंसर विशेषज्ञ हैं। इसके अलावा, कैंसर अनुसंधान का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढांचे को अभी लंबा सफर तय करना है।

"लोगों को अपने खान-पान के प्रति सचेत रहना चाहिए और किसी न किसी प्रकार का व्यायाम नियमित रूप से करना चाहिए। इसमें योग अहम भूमिका निभाता है। मरीजों को लक्षणों पर ध्यान देना चाहिए और नियमित जांच करानी चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण तंत्र का तत्काल आधार पर पालन किया जाना चाहिए। कैंसर को रोकने के लिए सक्रिय कदम उठाना महत्वपूर्ण है। सरकार को कैंसर की दवाओं की कीमतों को सीमित करना चाहिए क्योंकि ये बहुत महंगी हैं। अंत में, आहार में परिवर्तन कैंसर की रोकथाम में एक बड़ा बदलाव ला सकता है। सामुदायिक भागीदारी के साथ कारणों और लक्षणों के बारे में जागरूकता समय की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक (एनपीसीडीसीएस) की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम लागू किया जा रहा है। प्राथमिक घटकों में कैंसर की रोकथाम के लिए जागरूकता पैदा करना, जांच करना, जल्दी पता लगाना और इलाज के लिए उपयुक्त संस्थान को रेफर करना शामिल है। प्रत्येक राज्य में अलग-अलग इकाइयां स्थापित करने के प्राथमिक उद्देश्य से 'टर्शियरी केयर फॉर कैंसर' योजना शुरू की गई थी। तंबाकू के सेवन के खतरनाक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करने, तंबाकू उत्पादों की मांग और आपूर्ति को कम करने के लिए राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया गया है। कैंसर के इलाज की वित्तीय मांगों को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय आरोग्य निधि (आरएएन) शुरू की गई स्तन कैंसर के रोगियों के लिए हाल ही में एक दवा की खोज जीवन अवधि बढ़ाने में सक्षम होगी। कीमोथेरेपी पर दवा का एक फायदा है और मानक उपचार की तुलना में इसके कम दुष्प्रभाव हो सकते हैं। स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र को वित्तीय सहायता बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकार को युवाओं में धूम्रपान और शराब पीने की आदत को हतोत्साहित करना चाहिए। गुजरात और बिहार में शराबबंदी सही दिशा में उठाया गया एक कदम है। धूम्रपान को हतोत्साहित करने के लिए सिगरेट के पैकेट पर इसकी प्रभावशीलता के लिए चेतावनी की निगरानी की जानी चाहिए। उर्वरकों के अति प्रयोग को हतोत्साहित करना और जैविक खेती को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।

भारत सतत विकास लक्ष्यों के हिस्से के रूप में 2030 तक कैंसर से होने वाली मौतों को एक तिहाई कम करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसने काफी प्रगति की है। भारत में कुछ क्षेत्रों में सुधार हुआ है, जैसे व्यक्तिगत स्वच्छता, जो कैंसर को दूर करने में सहायक होगी। हमारा दृष्टिकोण न केवल निदान, उपचार के तौर-तरीकों और टीकों पर केंद्रित होना चाहिए, बल्कि आम समाधानों के लिए सोच और कार्रवाई में समावेश पर जोर देना चाहिए जो देश में सभी सामाजिक आर्थिक स्तरों पर कैंसर के प्रभाव को काफी कम कर सकते हैं। लोगों को अपने खान-पान के प्रति सचेत रहना चाहिए और किसी न किसी प्रकार का व्यायाम नियमित रूप से करना चाहिए। इसमें योग अहम भूमिका निभाता है। मरीजों को लक्षणों पर ध्यान देना चाहिए और नियमित जांच करानी चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण तंत्र का तत्काल आधार पर पालन किया जाना चाहिए। कैंसर को रोकने के लिए सक्रिय कदम उठाना महत्वपूर्ण है। सरकार को कैंसर की दवाओं की कीमतों को सीमित करना चाहिए क्योंकि ये बहुत महंगी हैं। अंत में, आहार में परिवर्तन कैंसर की रोकथाम में एक बड़ा बदलाव ला सकता है। सामुदायिक भागीदारी के साथ कारणों और लक्षणों के बारे में जागरूकता समय की आवश्यकता है।

चिंताजनक मुद्रास्फीति

लगातार नौ महीनों से मुद्रास्फीति छह प्रतिशत की अधिकतम निर्धारित सीमा से ऊपर है। सितंबर में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति 7.41 प्रतिशत रही, जो पांच महीने में सर्वाधिक है। उल्लेखनीय है कि पिछले साल सितंबर में यह दर मात्र 4.135 प्रतिशत थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार इसका मुख्य कारण खाद्य वस्तुओं की महंगाई है। सितंबर में इन वस्तुओं की मुद्रास्फीति 8.60 प्रतिशत रही।

यह 22 महीनों में सबसे अधिक है। मुद्रास्फीति की दर अनाज में 11.53, दुग्ध उत्पादों में 7.13, सब्जियों में 18.05 और मसालों में 16.88 प्रतिशत रही है। ईंधन व बिजली श्रेणी में भी यह दर 10 प्रतिशत से अधिक रही। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि पारिवारिक खर्च बढ़ता जा रहा है। ऐसे अनेक अध्ययन सामने आ चुके हैं कि मुद्रास्फीति के कारण लोगों, विशेष रूप से गरीब और निम्न आय वर्ग, को अपने आवश्यक उपभोग व व्यय में कटौती करनी पड़ रही है।

कुछ राहत दाल की मुद्रास्फीति दर के केवल 3.05 प्रतिशत रहने से है, पर इसके दाम पहले ही बढ़ चुके हैं। खाद्य पदार्थों की महंगाई की एक बड़ी वजह यह है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर आपूर्ति बाधित हुई है। मानसून के आखिरी चरण में देश के कई हिस्सों में लगातार भारी बारिश ने सब्जियों के उत्पादन और वितरण पर असर डाला है, जिससे उनके दाम बहुत अधिक बढ़े हैं। रिजर्व बैंक ने दुनिया के कई केंद्रीय बैंकों की तरह मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने के लिए ब्याज दरों में बढ़ोतरी की है और दिसंबर में फिर वृद्धि का अनुमान है।

इस साल के शुरू में तापमान बढ़ने से रबी फसलों का उत्पादन प्रभावित हुआ था, फिर कमजोर मानसून के कारण खरीफ की बुवाई कम हुई। उसके बाद सितंबर-अक्तूबर की बारिश ने खेती का नुकसान किया है। ऐसे में आगे भी अनाज के महंगे होने की आशंका है। रिजर्व बैंक का एक मुख्य कार्य मुद्रास्फीति को चार प्रतिशत के आसपास रखना है, जिसमें विशेष परिस्थितियों में दो प्रतिशत ऊपर या नीचे होने की गुंजाइश है।

भारतीय रिजर्व बैंक कानून के प्रावधान के अनुसार दो से छह प्रतिशत के बीच मुद्रास्फीति नहीं रख पाने पर रिजर्व बैंक को केंद्र सरकार के समक्ष स्पष्टीकरण देना होता है। तीन साल से मुद्रास्फीति चार प्रतिशत से ऊपर है तथा नौ महीने से यह छह प्रतिशत से भी अधिक है। अनेक विशेषज्ञ इसे रिजर्व बैंक की असफलता मानते हैं, तो कई जानकार विभिन्न कारकों को दोष देते हैं। दो साल से अधिक समय तक कोरोना महामारी की भयानक छाया भी अर्थव्यवस्था पर रही है।

राजनीतिक तरकस
अखबार में विज्ञापन देने के लिए संपर्क करें
नाम परिवर्तन, बेदखली सूचना, खोया-पाया,
हुड्डा नोटिस, हाउसिंग बोर्ड नोटिस,
नगरपालिका नोटिस, तहसीलदार नोटिस, कोर्ट नोटिस आदि ।
HT Media · The Times of India · The Tribune
The Indian Express · दैनिक जागरण · पंजाब केसरी
अमर उजाला · दैनिक भास्कर · दैनिक ट्रिब्यून
राष्ट्रीय सहारा · राजनीतिक तरकस
प्रधान संपादक
जितेंद्र तिवारी
प्रबंध संपादक
राजेश तिवारी
Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069
Website: www.rajneetiktarkas.in